SALTOC Project
Title: Madhumatī
Imprint: Udayapura: Rājasthāna Sāhitya Akādamī
OCLC: 3195624
Volume 48: no 4, April 2008

TOC Supplied By: Columbia University Libraries

मूल्य : दस रु.

मधुमती

अप्रैल, २००८

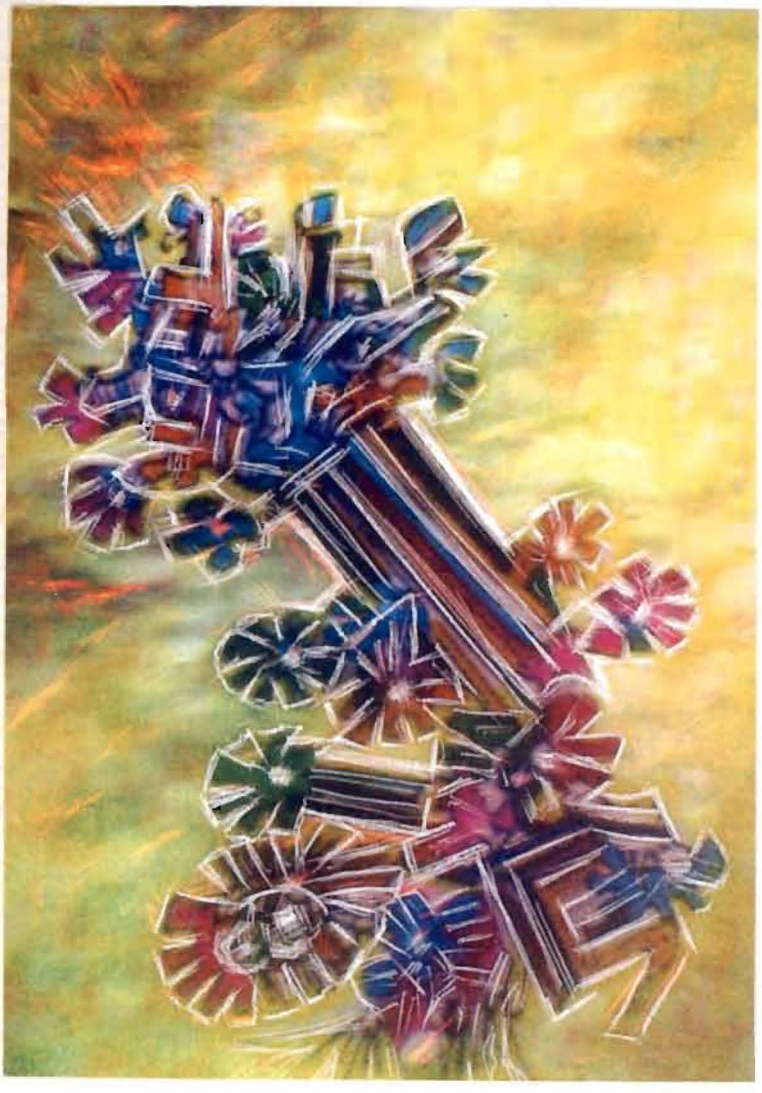

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
www.lakesparadise.com/madhumati

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

- सत्ता या प्रेम / डॉ. अजित गुप्ता ५

लेख

- साहित्यकार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता / डॉ. अमर सिंह वधान ८
- रामचरितमानस में शाश्वत जीवनमूल्य एवं रामायण की प्रासंगिकता/ डॉ. चन्द्रकान्त मेहता १२
- हिन्दी कविता में स्वतंत्रता के उपरान्त मोहभंग / दुर्गाशंकर त्रिवेदी १६
- समकालीन हिन्दी कहानी : नये संदर्भ / डॉ. मदन केवलिया २३
- राष्ट्र और भाषा के निर्माण में समाज की भूमिका / डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली २७
- पं. मदनमोहन मालवीय का सांस्कृतिक अवदान / डॉ. विनय मिश्र ३०
- आचार्य द्विवेदी की कविता / डॉ. हीरालाल बाछोलिया ३३
- युग प्रवर्तक बनेगा भारत / डॉ. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता ३७
- नोबेल २००७ से अलंकृत डोरिश लेसिंग / विजय सिंह नाहटा ३६

कविता

- दो कविताएँ / डॉ. मनोहर प्रभाकर ४१
- विकास की त्रासदी / डॉ. वीरबाला भावसार ४२
- तीन कविताएँ / रामप्रसाद दाधीच ४३
- चार कविताएँ / ओम नागर ४५
- दो कविताएँ / डॉ. हुसैनी बोहरा ४७
- दो कविताएँ / सुरेशचन्द्र सर्वहारा ४८
- व्यंग्य क्षणिकाएँ / गोपीनाथ 'चर्चित' ४६

कहानी

- हरकारा / राजेन्द्र केडिया ५०
- शाप - मुक्त / डॉ. विनीता लवानिया ५६
- स्वप्न कथा / बुलाकी शर्मा ५६
- लव बर्ड / डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत ६२
- ऐसा ही है? / डॉ. महीप सिंह ६५

गीत ग़ज़ल

- दो गीत / कविता किरण ७३
- तीन गीत / मधुकर गौड़ ७५
- तुम बिन लगते घर के द्वारे / अजय अनुरागी ७७
- बस्ती-बस्ती हो खुशहाली / श्याम झँवर 'श्याम' ७८
- चार नवगीत / कुमार रवीन्द्र ७९
- दो ग़ज़लें / रमेशचन्द्र पंत ८१
- चार ग़ज़लें / राजेन्द्र निशेश ८२
- चार ग़ज़लें / ऋषिवंश ८४

व्यंग्य

- पर्यावरण बचाओ 'अर्थ' बचाओ / रामविलास जांगिड़ ८६

साक्षात्कार

- डॉ. कमलकिशोर गोयनका से श्री दुलाराम सहारण की बातचीत ८८

भाषान्तर

- आघात (कहानी) / मू. शुभांगी भडभडे अनु. डॉ. सुशीला दुबे ९१

पुस्तक समीक्षा

- स्वप्निल कहानियाँ, कांधा, खाली कोना / डॉ. चन्द्रकान्ता बंसल ९९
- अम्मा का चश्मा, खोई हुई मुस्कान / डॉ. सत्यनारायण १०४
- सैलाब / डॉ. नीतू परिहार १०६

समाचार - वीथी १०७

पाठक संवाद ११७